भारतेंदु हरिश्चंद्र

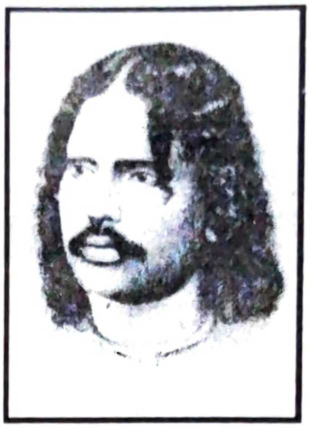

जन्म	:	9 सितंबर 1850 ।
निधन	:	6 जनवरी 1885 ।
जन्म-स्थान	:	वाराणसी, उत्तर प्रदेश ।
माता-पिता	:	पार्वती देवी और गोपाल चंद्र (कवि नाम : गिरिधर दास) ।
शिक्षा	:	मुख्यतः घर पर स्वाध्याय द्वारा, बहुपठित, बहुश्रुत, विविध विषयों का ज्ञान ।
भाषाज्ञान	:	हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला, मराठी आदि अनेक भाषाओं में गति ।
रचनाएँ	:	काव्य– प्रेम सरोवर, प्रेम माधुरी, प्रेम तरंग, वर्षा विनोद, जातीय संगीत, विजय वल्लरी आदि ।
		नाटक - विद्यासुंदर, रत्नावली, नीलदेवी, भारत-दुर्दशा, अँधेर नगरी, सत्य हरिश्चंद्र, श्री चंद्रावली आदि ।
		गद्य - वैष्णव सर्वस्व, एक कहानी : कुछ आपबीती कुछ जगबीती, स्वर्ग में विचार सभा, जातीय संगीत आदि ।
		संपूर्ण रचनाएँ - भारतेंदु ग्रंथावली (3 खंड), भारतेंदु समग्र ।

हिंदी साहित्य के इतिहास में भारतेंदु हरिश्चंद्र आधुनिक काल के प्रवर्तक साहित्यकार के रूप में सम्मानित हैं । वे युग प्रवर्तक महान साहित्यकार ही नहीं, अपने युग के महानायक भी थे । उनके युग का नाम, इसीलिए उनके ही नाम पर रखा गया–भारतेंदु युग । उन्होंने अपने समय के प्रायः सभी साहित्यकारों -पत्रकारों और संस्कृतिकर्मियों का नेतृत्व किया, दिशा-निर्देश किया, उन्हें प्रेरित और अनुप्राणित किया । कविता, कथा-साहित्य, नाटक, निबंध, आलोचना, यात्रा साहित्य, पत्रकारिता, वैचारिक साहित्य आदि तमाम विधाओं में उन्होंने रूप और अंतर्वस्तु दोनों ही धरातलों पर नूतन समारंभ किया । अनेक विधाओं और साहित्य रूपों के श्री गणेश का श्रेय उन्हें प्राप्त है । उन्होंने बच्चों, स्त्रियों, और सामान्य पाठकों के लिए हिंदी में पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित कीं और उनके माध्यम से अनेक लेखक और साहित्यकारों का प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से निर्माण किया । हिंदी भाषा और साहित्य में वे नवजागरण के अग्रदूत थे । उन्होंने साहित्य को नए विषय, नए भावबोध, नई रूप चेतना, विचार, अभिव्यक्ति शैली और भाषा से लैस किया । उस युग के साहित्य पर एक ऐसी छाप है, मानो एक ही लेखक सैकड़ों मुखों से बोल रहा हो, सैकड़ों हाथों से लिख रहा हो । वास्तव में यह अखंड युग चेतना और प्रबल युगोद्देश्य के कारण हुआ । इसके पीछे मूलतः भारतेंदु और उनके मित्र लेखकों की एकीभूत युगप्रेरणा रही है ।

भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म पराधीन भारत में अवश्य हुआ था, किंतु होश सँभालते ही उन्होंने 1857 का प्रथम स्वाधीनता समर देखा । स्वाधीनता संकल्प के इस प्रथम विस्फोट ने उनके भीतर जातीय अस्मिता, यथार्थबोध, परिवर्तन-कामना के साथ ही उद्देश्य-चेतना जगाई । अशिक्षा, अज्ञान, अंधविश्वास, दरिद्रता, कुरीति, कलह और वैमनस्य में डूबे भारतीय समाज को गहराई से समझने की अंतर्दृष्टि दी । धर्म-संप्रदाय-भाषा-जाति की संवाद रहित विविधताओं में डूबा तथा सामाजिक कुप्रथाओं और कुरीतियों में जकड़ा हुआ अशिक्षित समाज भला स्वाधीनता के लिए संघर्ष कैसे कर सकता था ? सबसे पहले तो इन प्रतिकूल परिस्थितियों से रचनात्मक संघर्ष आवश्यक था । समाज में अपनी भाषा और साहित्य के द्वारा उस गहरे ऐतिहासिक आत्मबोध को जगाना आवश्यक था, जिसे लोग भूल रहे थे । साथ ही 1857 के विद्रोह ने जो स्वाधीनता की कामना और संकल्प जगाए थे उन्हें न केवल जिंदा रखना बल्कि उत्तरोत्तर बढ़ाते जाना भी उतना ही जरूरी था । भारतेंदु ने अपने नए ढंग के साहित्य द्वारा यह कार्य शुरू किया । उन्होंने लेखन, पत्रकारिता, प्रेरणा-प्रोत्साहन, संगठन, यात्रा एवं अन्य गतिविधियों द्वारा विविध स्तरों पर विविध दिशाओं से, स्वयं तथा अपने मित्र लेखकों द्वारा, भाषा, साहित्य और समाज में नई चेतना जगाने का कार्य शुरू किया । वे सिर्फ एक व्यक्ति नहीं, संस्था की तरह सक्रिय रहे । युवावस्था में ही यद्यपि उनका निधन हो गया, किंतु उनके मित्र लेखकों ने आगे भी यह कार्य जारी रखा, और न केवल भाषा-साहित्य में नए युग की अवतारणा की, बल्कि समाज में गहरे आत्ममंथन और बदलाव की भी आधारशिला रखी । भारतेंदु और उनके साथी लेखकों ने अपनी साहित्यिक गतिविधियों और रचनाओं द्वारा स्वाधीनता संग्राम को तेज किया और उसे उचित दिशा में आगे बढ़ाया ।

यहाँ प्रस्तुत कविता 'भारत-दुर्दशा' भारतेंदु की बहुचर्चित विख्यात कविता है जिसमें उनकी राष्ट्रीयता, देशोन्नति व जातीय उत्थान के लिए अंतर्व्यथा ऐतिहासिक यथार्थ के विडंबनापूर्ण बोध के भीतर से जन्म लेती दिखाई पड़ती है । एक ओर स्वर्णिम अतीत का आत्मगौरव और दूसरी ओर यह प्रत्यक्ष वर्तमान, अशिक्षा, अज्ञान और अंतर्कलह में डूबा हुआ, क्या यही है भारत की वास्तविकता ? अतीत और वर्तमान, स्वाधीनता और पराधीनता, यहाँ वैषम्य की एक दंशमय अनुभूति जगाते हैं । भारतेंदु ग्रंथावली से ली गई यह कविता 'भारत-दुर्दशा' नाटक के आरंभ में रंग-प्रस्तावना की तरह शामिल है ।

◆ ◆ ◆

“ कहैंगे सबही नैन नीर भरि भरि पाछै
प्यारे हरिचंद की कहानी रह जायगी ”
—भारतेंदु

भारत-दुर्दशा

रोवहु सब मिलिकै आवहु भारत भाई ।
हा हा ! भारत-दुर्दशा न देखी जाई ।।

सबके पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनो ।
सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो ।।
सबके पहिले जो रूप रंग रस भीनो ।
सबके पहिले विद्याफल जिन गहि लीनो ।।
अब सबके पीछे सोई परत लखाई ।
हा हा ! भारत-दुर्दशा न देखी जाई ।।

जहँ भए शाक्य हरिचंदरु नहुष ययाती ।
जहँ राम युधिष्ठिर बासुदेव सर्याती ।।
जहँ भीम करन अर्जुन की छटा दिखाती ।
तहँ रही मूढ़ता कलह अविद्या राती ।।
अब जहँ देखहु तहँ दुःखहिं दुःख दिखाई ।
हा हा ! भारत-दुर्दशा न देखी जाई ।।

लरि बैदिक जैन डुबाई पुस्तक सारी ।
करि कलह बुलाई जवनसैन पुनि भारी ।।
तिन नासी बुधि बल बिद्या धन बहु बारी ।
छाई अब आलस कुमति कलह अँधियारी ।।
भए अंध पंगु सब दीन हीन बिलखाई ।
हा हा ! भारत-दुर्दशा न देखी जाई ।।

अंगरेजराज सुख साज सजे सब भारी ।
पै धन बिदेश चलि जात इहै अति ख्वारी ।
ताहू पै महँगी काल रोग बिस्तारी ।
दिन दिन दूने दुःख ईस देत हा हा री ।।
सबके ऊपर टिक्कस की आफत आई ।
हा हा ! भारत-दुर्दशा न देखी जाई ।।

अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि सभी भारतीयों को किसलिए आमंत्रित करता है और क्यों ?
2. कवि के अनुसार भारत कई क्षेत्रों में आगे था पर आज पिछड़ चुका है । पिछड़ने के किन कारणों का कविता में संकेत किया गया है ?
3. अब जहँ देखहु तहँ दु:खहिं दु:ख दिखाई ।
हा हा ! भारत-दुर्दशा न देखि जाई ।।
–इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए ।
4. भारतीय स्वयं अपनी इस दुर्दशा के कारण हैं । कविता के आधार पर उत्तर दीजिए ।
5. 'लरि बैदिक जैन डुबाई पुस्तक सारी ।
करि कलह बुलाई जवनसैन पुनि भारी ।।
–इन पंक्तियों का क्या आशय है ?
6. 'सबके ऊपर टिक्कस की आफत' –से कवि ने क्या कहना चाहा है ?
7. अंग्रेजी शासन सारी सुविधाओं से युक्त है, फिर भी यह कष्टकर है, क्यों ?
8. कविता का सरलार्थ अपने शब्दों में लिखें ।
9. निम्नलिखित उद्धरणों की सप्रसंग व्याख्या करें –
(क) रोवहु सब मिलि कै आवहु भारत भाई ।
हा हा ! भारत-दुर्दशा न देखि जाई ।।
(ख) अंगरेज राज सुख साज सजे सब भारी ।
पै धन बिदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।
10. स्वाधीनता आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में इस कविता की सार्थकता पर विचार कीजिए ।

कविता के आस-पास

1. प्रस्तुत कविता भारतेंदु के नाटक 'भारत-दुर्दशा' से उद्धृत है । पुस्तकालय से इस नाटक को उपलब्ध कर पढ़ें । विद्यालय में अपने मित्रों के साथ इसका मंचन करें । इसमें अपने शिक्षक की भी मदद लें ।
2. भारतेंदु ने अपने समय की राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था पर व्यंग्य किए हैं । 'अंधेर नगरी' एक ऐसा ही बहुचर्चित प्रहसन है । इसे भी पुस्तकालय से प्राप्त कर पढ़ें । अंधेर नगरी का एक अंश यहाँ दिया जा रहा है, इससे आप भारतेंदु की व्यंग्य क्षमता से परिचित हो सकते हैं –

चूरन बना मसालेदार । जिसमें खट्टे की बहार ।।
मेरा चूरन जो कोई खाय । मुझको छोड़ कहीं नहिं जाय ।।
हिंदु चूरन इसका नाम । विलायत पूरन इस का काम ।।
चूरन जब से हिंद में आया । इसका धन बल सभी घटाया ।।
चूरन ऐसा हट्टा कट्टा । कीना दाँत सभी का खट्टा ।।
चूरन अमले सब जो खावैं । दूनी रुशवत तुरत पचावैं ।।
चूरन सभी महाजन खाते । जिससे जमा हजम कर जाते ।।
चूर खावै एडिटर जात । जिन के पेट पचै नहिं बात ।।
चूरन साहेब लोग जो खाता । सारा हिंद हजम कर जाता ।।
चूरन पुलिसवाले खाते । सब कानून हजम कर जाते ।।

3. भारतेंदु की भाषा ब्रजभाषा है । ब्रजभाषा में लिखने वाले उनके समकालीन तीन कवियों एवं उनकी रचनाओं के नाम लिखें ।
4. कविता में कई पौराणिक पात्रों का उल्लेख है । उनके संबंध में अपने शिक्षक से चर्चा करें ।
5. भारतेंदु हरिश्चंद्र ने साहित्य की किन-किन विधाओं में रचनाएँ दी हैं ? विभिन्न विधाओं की ऐसी कुछ रचनाओं का उल्लेख कीजिए ।
6. भारतेंदु के नाम पर उनके युग का नाम क्यों रखा गया ? एक टिप्पणी लिखें ।
7. भारतेंदु युग के पाँच गद्य लेखकों की सूची उनकी प्रमुख रचनाओं के साथ बनाएँ ।
8. भारतेंदु ने कई पत्रों का प्रकाशन और संपादन किया । आप उन पत्रों की सूची वर्षवार क्रम में बनाएँ ।
9. भारतेंदु की जीवनी हिंदी साहित्य का इतिहास और दूसरी पुस्तकों की सहायता से तैयार करें और भारतेंदु जयंती का आयोजन कर उसमें उसका पाठ करें Ihttps://www.evidyarthi.in/
10. भारतेंदु ने कई प्रहसन लिखे हैं । किसी एक प्रहसन का भारतेंदु जयंती के अवसर पर मंचन करें ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें –
ईश्वर, रोग, दिन, दीन, राज, कलह, अविद्या, कुमति, छटा
2. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य प्रयोग द्वारा लिंग-निर्णय करें –
दुर्दशा, विद्या, दुख, पुस्तक, धन, सुख, बल, मूढ़ता, विद्याफल, आफत, महँगी, आलस
3. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखें –
दुर्दशा, रूप, विद्या, कलह, कुमति, विदेश
4. संज्ञा के विविध भेदों के उदाहरण कविता से चुनें ।
5. इन शब्दों का संधि विच्छेद करें –
युधिष्ठिर, हरिचंदरु, यद्यपि, युगोद्देश्य, प्रोत्साहन

शब्द निधि

आवहु : आओ
भीनो : सिक्त, भींगा हुआ

लखाई : दिखाई
मूढ़ता : मूर्खता
अविद्या : अज्ञान
राती : अंधकार
जवनसैन : यवनों की सेना
पुनि : फिर
नासी : नष्ट
विलखाई : बिलखना, विलाप करना
ख्वारी : कष्टकारी
टिक्कस : टैक्स, कर
पंगु : लंगड़ा
आफत : आपदा, विपत्ति